जैन कन्या पाठशाला (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय,
मुजफ्फरनगर (उ॰ प्र॰)

डॉ॰ अनामिका जैन
सहायक आचार्या
हिन्दी विभाग

केशवदास (1560 - 1617 ई.)

केशवदास को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने समय- विभाग
की दृष्टि से यद्यपि भक्तिकाल मे स्थान दिया है तथापि
प्रवृत्ति की दृष्टि से वे रीतिकाल के अन्तर्गत आते हैं।
वस्तुतः केशवदास से हिन्दी की रीति परम्परा प्रारम्भ होता
है। वे हिन्दी के प्रमुख अलंकारवादी आचार्य माने जाते है।

केशवदास का जन्म 1560 ई. और मृत्यु 1617
ई. में हुई। ये ओरछा नरेश महाराज रामसिंह के भाई इन्द्रजीत
सिंह के आश्रय में रहते थे। केशवदास को अलंकारवादी
इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे अलंकारहीन कविता को
सुन्दर ही नहीं मानते थे :

जदपि सुजाति सुलच्छनी सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषन बिनु न बिराजई कविता बनिता मित्त॥

रचना संसार : केशवदास द्वारा रचित ग्रन्थों के नाम एवं विषय-वस्तु इस प्रकार हैं –

	रचना का नाम	रचनाकाल	विषय वस्तु
1	रसिकप्रिया	1591 ई.	रीतिग्रंथ (नवरस का वर्णन)
2	रामचन्द्रिका	1601 ई.	प्रबंध-काव्य (रामकथा का वर्णन)
3	कविप्रिया	1601 ई.	रीतिग्रंथ (अलंकारों का वर्णन)
4	रतनबावनी	1607 ई.	आश्रयदाताओं की प्रशस्तिविषयक रचना
5	वीरसिंह देव चरित	1607 ई.	आश्रयदाताओं की प्रशस्तिविषयक रचना
6	विज्ञानगीता	1607 ई.	आध्यात्मिक ग्रन्थ (कवि के दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति)
7	जहाँगीर जसचन्द्रिका	1612 ई.	आश्रयदाताओं की प्रशस्तिविषयक रचना
8	नखशिख	–	परम्परागत उपमानों की सहायता से राधा के विभिन्न अंगों का वर्णन
9	छन्दमाला	–	रीतिग्रंथ (छन्दों का वर्णन)

केशवदास जी हिन्दी साहित्य के प्रथम आचार्य हैं। हिन्दी में सर्वप्रथम उन्होंने ही काव्य के विभिन्न अंगों का शास्त्रीय पद्धति से विवेचन किया है। यह ठीक है कि उनके काव्य में भाव-पक्ष की अपेक्षा कला-पक्ष की प्रधानता है और पांडित्य-प्रदर्शन के कारण उन्हें 'कठिन काव्य का प्रेत' कहकर पुकारा जाता है किन्तु उनका महत्त्व बिलकुल समाप्त नहीं हो जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में केशव की रचना में सूर, तुलसी आदि की सी सरलता और तन्मयता चाहे न हो, पर काव्यांगों का विस्तृत परिचय कराकर उन्होंने आगे के लिए मार्ग खोला है। केशवदास जी वस्तुतः एक श्रेष्ठ कवि थे। सूर और तुलसी के पश्चात् हिन्दी-काव्य-जगत् में उन्हीं की गणना की जाती है-

"सूर-सूर तुलसी ससी उडुगन केशवदास।
अबके कवि खद्योत सम जह-तह करत प्रकाश॥"

केशवदास के सभी ग्रंथों में रामचन्द्रिका आकार में बड़ी है और प्रसिद्धि की दृष्टि से सर्वाधिक चर्चित भी। या यूँ कहें कि रामचन्द्रिका 'रामचरितमानस' के बाद हिन्दी का सबसे उल्लेखनीय राम-सम्बन्धी प्रबंधकाव्य है। संभवत: तुलसी के ग्रंथ की लोकप्रियता ने ही केशव को रामकाव्य लिखने की ओर प्रेरित किया और उन्होंने अपनी मौलिकता सिद्ध करने के लिए एक भिन्न ढंग से कथा उठाई है। कवि ने लिखा है कि ग्रंथ-निर्माण की प्रेरणा उसे एक दिन 'महाकवि वाल्मीकि' से स्वप्न में प्राप्त हुई थी -

" वाल्मीकि मुनि स्वपन में, दीन्हो दर्शन चारु।
केशव तिनसों यों कह्यो क्यो पाऊ सुख सारु ॥
मुनिपति यह उपदेश दै, जब ही भये अदृष्ट।
केशवदास तहीं कर्‍यो रामचन्द्र जू इष्ट ॥ "

इससे अनुमान लगाया जाता है कि 'रामचन्द्रिका' की रचना उन्होंने वाल्मीकि-रामायण के अनुकरण पर ही रची होगी। वाल्मीकि-रामायण और रामचन्द्रिका की कथावस्तु में थोड़ी सतही समानता भी है, लेकिन फिर भी इसमें वर्णित कथा वही नहीं है और न वही क्रम है जो वाल्मीकि-रामायण और रामचरितमानस का है। जैसे पूर्वार्द्ध में कथा-क्रम कुछ-कुछ साम्य है लेकिन उत्तरार्द्ध में कवि की स्वयं की उद्भावना और व्यवस्था है। इसमें कवि ने काव्यात्मक परम्परा, मार्मिक स्थलों को ही स्वीकारने की परम्परा, अध्यायों में ही कथा को बाँधने की परम्परा को तोड़ा है। इस महाकाव्य के माध्यम से कवि केशवदास का पांडित्य प्रदर्शित होता है। संवाद-योजना, अलंकार-योजना, प्रकृति-चित्रण, छंद-योजना और भाषा आदि की दृष्टि से यह काव्य कवि के कौशल को ही प्रस्तुत करता है जिससे रामचन्द्रिका का काव्य-सौन्दर्य और अधिक उभरकर हमारे सामने आता है।

धन्यवाद !